Doctor Sahib, kuch ho sake toh dekh lijiye ga [Hindi]

Sagar Borker, MD

Associate Professor in PSM, ABVIMS and Dr Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi

Corresponding Author:
Dr. Sagar Borker
PGIMER and Dr Ram Manohar Lohia Hospital
Baba Kharag Singh Marg, New Delhi
Email: sagarborker at gmail dot com

Received: 17-JUN-2021 Accepted: 22-JUN-2021 Published: 03-SEP-2021

कोरोना नहीं है, है जुकाम
बुखार नहीं है, करना है थोड़ा आराम
हर दिन होवे जोखिम ज्यादा और ज्यादा
जाँच करवालेने का न होवे पक्का वायदा
स्क्रीनिंग केंद्र की कतारों में खड़े रहकर आतें हैं चक्कर
पड़ोसी बोली - डॉक्टर साहब, थोड़ा जल्दी करवा दीजिएगा
कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

ऑक्सीजन का स्तर जब घटा
आया रिश्तेदार को रिश्ता याद
बेड, आईसीयू दिलाया तो कर देंगे आबाद
दाह संस्कार की नौबत आई तो कर देंगे बरबाद
निवेदन मुख पर था और गुस्सा आँखों में
दर्जनों डॉक्टर बदल कर रिश्तेदार बोले - डॉक्टर साहब,
कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

बलखाके, मटकाके इतराती आई वो
ऑनलाइन एप्वाइंटमेंट न ले पाई वो
सर्वर था डाउन, बॉय फ्रेंड था आउट ऑफ टाउन
डॉक्टर को किया निवेदन, पर वो था मौन
टीकाकरण केंद्र में बवाल माचाया, अंत में बोली -
डॉक्टर साहब, कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

वैक्सीन वैक्सीन पर लिखा है लगवाने वाले का नाम
न लगवानेवाले का क्या काम ?

Cite this article as: Borker S. Doctor Sahib, kuch ho sake toh dekh lijiye ga [Hindi}. RHiME. 2021;8:96-7.

बहुत दूर से आए हैं, डॉक्टर साहब
बहन की सगाई है, डॉक्टर साहब
प्यार के दुश्मन न बनें, डॉक्टर साहब
एक भाई गुहार लगाते हुए बोला
वैक्सीन दिलवा दीजिएगा
डॉक्टर साहब, कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

पहले साइड इफेक्ट और फिर मौत का डर सताया
इसलिए टीका न लग पाया
फिर दिल आया कोविशील्ड पर
फिर दिल आया कोवैक्सीन पर
फिर दिल आया स्पूतनिक पर
अब टीका केंद्र में आके क्या फायदा
ऑनलाइन एप्वाइंटमेंट का जब हो गया है बेजोड़ कायदा
टीका भी है कम
बद्दुआ मन ही मन देते हुए एक बुज़ुर्ग एक कोने में लेजाके बोला
डॉक्टर साहब, कुछ ले देके हो जायेगा ?
कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

चिकित्सा का छात्र हुआ विचलित
पाठ ऑनलाइन का न आया समझ
शिक्षक भी कोरोना ड्यूटी से था थका हुआ
समझा भी न पाया जितना था समझाना
परीक्षा में अत्यंत तनाव में आके छात्र बोला
पास करवा दीजिएगा
डॉक्टर साहब, कुछ हो सके तो देख लेना. . .

शमशान में भी था वेटिंग
लाशों की थी न कोई सेटिंग
जब था बोलने के काबिल तब था वो मूक दर्शक
अब न मिले पादरी या अर्चक
सगे- संबंधियों को भी लगता दाह संस्कार में डर
लाश के संबंधी बोले - डॉक्टर साहब, आप ही करवा दीजिएगा
कुछ हो सके तो देख लीजिएगा. . .

कोरोना काल में कवि तू हो ना विचलित
न हो कोई कवि सम्मेलन या कवि गोष्ठी
झाड़ू, पोंछा, बर्तन और बेबी- सिटिंग से फुर्सत मिले तो सुन लीजिएगा
कुछ हो सके तो देख लिजीएगा. . .